10

पूर्व प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण

पद्मा यादव*

भाषा सीखना एक सहज प्रक्रिया है — यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है और यह मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए सबसे उपयोगी साधन है। भाषा की शिक्षा से ही मनुष्य का सामाजिक और बौद्धिक विकास होता है। परंतु पढ़ना-लिखना बच्चों को शुरुआत में कठिन लगता है। उसे रोचक और सहज बनाने के लिए इस लेख में कुछ सुझाव दिए गए हैं जो कि शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के अनुसार, यह ज़रूरी नहीं है कि बच्चे सारे अक्षर जानने के बाद ही मात्रा पहचान पाएँगे या इस्तेमाल कर पाएँगे। इसमें सार्थक संदर्भ सामग्री की बात कही गई है जिसका प्रयोग अध्यापक की मदद से बच्चे बार-बार लिखित सामग्री को देखते हुए पढ़ने की शुरुआत कर सकते हैं। शिक्षक की मदद से, चित्रों से मिल रहे संकेतों का इस्तेमाल करते हुए और अनुमान लगाते हुए बच्चे पढ़ना सीख सकेंगे। परंतु पाया यह गया है कि यह प्रक्रिया लंबी है और कई बार शिक्षक इसमें कठिनाई महसूस करते हैं। कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को लिखित और मुद्रित सामग्री से भरपूर परिवेश उपलब्ध कराया भी जाए तब भी अक्षरों के पहचान की प्रक्रिया बच्चों के लिए मुश्किल होती है। जब तक कि उन्हें व्यवस्थित ढंग से अक्षर बोध न करवाया जाए परंतु कुछ का मानना है कि यदि बच्चों को पढ़ने-लिखने का माहौल दिया जाए तो बच्चे स्वयं ही पढ़ने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

क्या करें शिक्षक?

प्रारंभिक कक्षाओं की शुरुआत में बच्चों में स्कूल को लेकर भय होता है। विशेषकर उन बच्चों को भय होता है जो बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अनुभव लिए सीधे कक्षा एक प्रवेश पाते हैं। ज़्यादातर ऐसे बच्चे शिक्षकों से एवं अन्य बच्चों से झिझकते हैं। पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया उनके लिए बिलकुल नई होती है। भाषा का सबसे महत्वपूर्ण कौशल सुनना है। अगर किसी भाषा को हम सीखना चाहते हैं तो उसे सुनने और बोलने का मौका मिलने पर हम आसानी से उस भाषा को सीख सकते हैं। इसीलिए सुझाव यह है कि स्कूली शिक्षा की शुरुआत सीधे अक्षर ज्ञान से नहीं की जानी चाहिए। किसी भी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा से परिचित होना आवश्यक होता है

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110 016

और यह काम कक्षा में संवाद से ही किया जा सकता है। कक्षा का संवाद बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को मज़बूती देता है, भाषा से परिचित कराता है और सीखे गए को अनुभव से जोड़ने में मदद करता है।

आरंभ में बच्चों को कुछ पशुओं, पक्षियों, फल, सब्जियों, यातायात के साधनों और पेड़-पौधों के चित्र दिखाने चाहिए, ताकि बच्चों का ध्यान पुस्तक पर केंद्रित हो सके तथा रोचक और उपयोगी बातचीत के लिए आधार बन सके।

चित्रों को देखकर उन पर बातचीत करने से बच्चों की झिझक खुलती है। बच्चों के लिए स्कूल का वातावरण घर से बिलकुल अलग होता है। पहले उन्हें नए वातावरण से परिचित होने का पूरा अवसर देना चाहिए, जैसे — शौचालय कहाँ है? खेल के मैदान की तरफ कैसे जाएँगे? हाथ कहाँ धोया जा सकता है? खेल-खिलौने कहाँ रखे हैं? पीने का पानी कहाँ है? आदि।

> कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर भी पढ़ने-लिखने की दिशा में प्रेरित हो सकते हैं। उनको इसके लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
>
> एन.सी.एफ़. 2005

बच्चों से उनके घर-परिवार, पास-पड़ोस, खेल-कूद आदि पर बातचीत करें, कहानियाँ सुनाइए, पहेलियाँ बूझें और उचित अंग संचालन (body movements) के साथ गाना गवाइए। इन क्रियाओं से बच्चों की झिझक खुलती है।

कहानियों में बच्चे विशेष रुचि रखते हैं। कहानियाँ बच्चों की कल्पनाओं को विस्तार देती हैं, उनमें अनुमान लगाने के कौशल को विकसित करती हैं, घटनाओं को क्रमबद्ध करके रखने में मदद करती हैं और कहानी की संरचना को समझने में मदद करती हैं। इसके लिए कक्षा में कहानियाँ सुनने-सुनाने की गतिविधियों को प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। किताबों में छपे चित्रों पर होने वाली चर्चा बच्चों के भाषा का इस्तेमाल करने का एक सुंदर मौका देती है। इसलिए चित्र कहानी बनाना, चित्र कहानी को शब्द देना, दो चित्रों में अंतर खोजना आदि इसी तरह की गतिविधियाँ हो सकती हैं जो भाषा को निखारने में मदद कर सकती हैं। चित्रों को देखने से बच्चों की आँखें पुस्तक या कागज़ पर छपी किसी चीज़ को देखने के लिए तैयार हो जाती हैं। साथ ही हाथ और आँख में तालमेल हो जाता है जिससे की बच्चे पुस्तक पर अँगुली रख पढ़ने का अभ्यास करने लगते हैं। अगर हम कहानियों के कार्ड बना लें, यानि कि यदि हम किसी छोटी सी कहानी को चार टुकड़ों में बाँट लें और उनके चित्र कार्ड बना लें फिर क्रमिक घटना के हिसाब से क्रम वार एक-एक कार्ड दिखाकर बच्चों को कहानी सुनाते चलें तो बच्चे कहानी सुनने के साथ-साथ चित्रों के माध्यम से ज्यादा ताल-मेल बिठा सकते हैं और कहानी समझ सकते हैं। इस दौरान हम कहानी के चित्र कार्डों को बाईं से दाईं ओर और ऊपर से नीचे क्रम से रखते जाएँ तो बच्चों की आँखों को बाईं ओर से दाईं ओर तथा ऊपर से नीचे की ओर जाने का भी अभ्यास हो सकेगा साथ ही क्रमवार सोचना भी आ जाएगा। शिक्षिका बच्चों को एक चित्र दिखा कर कह सकती हैं — देखो चित्र में कौन-कौन है? क्या हो रहा है? देखो कहानी में फिर क्या हुआ; ढूँढ़ो और क्रम से लगाओ (पहले रखे कार्ड के दाईं ओर दूसरा कार्ड रखवाओ), फिर देखो क्या हुआ (याद करो) और कार्ड को क्रम से लगाओ इत्यादि।

शिक्षिका एक पिक्चर कार्ड दिखाकर भी पूछ सकती हैं — बताओ या सोचो क्या हुआ होगा; आगे क्या होगा इत्यादि।

मानसिक विकास के लिए इस प्रकार की गतिविधियाँ बहुत ही सहायक होती हैं।

प्रारंभिक दो-तीन सप्ताह उपर्युक्त क्रियाएँ कराई जानी चाहिए। जब बच्चों को कहानी सुनाए तब उसमें प्रयुक्त शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें, ताकि बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि हो सके और वे खेल खेल में नए शब्दों और अक्षरों से परिचित हो सकें। खेल-खेल में बच्चों को अक्षर-ज्ञान आरंभ कराया जा सकता हैं।

हिंदी भाषा के सभी लिपि चिह्नों के प्रयोग की आवृत्ति समान नहीं होती है। क,म,र,न,ल,स,ब आदि व्यंजनों का प्रयोग कहीं अधिक होता है। छ,ढ,ण,ढ,ष का प्रयोग कम होता है। स्वरों की तुलना में उनकी मात्राओं का प्रयोग कहीं अधिक होता है। यह इसलिए अच्छा होता है यदि हम ज़्यादा प्रयोग किए जाने वाले लिपि संकेत से बच्चों को पहले परिचित कराएँ। इससे बच्चे उनसे बनने वाले शब्दों को सरलता से पढ़ना सीख सकेंगे। बिना मात्रा वाले शब्द पहले लिए जाने चाहिए फिर ज़्यादा प्रयुक्त मात्रा वाले। जैसे — पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंत तक बच्चों को यदि कुछ स्वर,व्यंजनों का ज्ञान होने लगे तो आगे पढ़ने लिखने में रूचि बढ़ने लगती हैं। स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ) कक्षा 2 – 3 में आते-आते या अंत तक आ जाते हैं, इनको चित्रों के माध्यम से और भी आसानी से सिखाया जा सकता है। दूसरी कक्षा के अंत तक बच्चे हिंदी भाषा के सभी परिचित शब्दों को लगभग पढ़ने में समर्थ होने लगते हैं और परिचित व्यंजनों के साथ सीखी हुई मात्राओं के योग का अभ्यास करने लगते हैं तथा तीसरी कक्षा में हिंदी के अतिरिक्त गणित तथा पर्यावरण अध्ययन की किताबें पढ़ने के लिए तैयार होने लगते हैं। शब्दों का चयन कक्षा 1 और 2 में ऐसा होना चाहिए जिससे कि हिंदी भाषा-भाषी बच्चे प्राय:परिचित हों, ताकि विद्यालय में आने के बाद और पुस्तकों में शब्द या चित्र देखने के उपरांत उन्हें वे नए नहीं लगें। लिपि चिह्नों के योग से बनने वाले शब्दों को पढ़ने के अभ्यास से, उन शब्दों के मेल से बनने

वाले वाक्यों को पढ़ने की योग्यता से बच्चों में भाषा का विकास निरंतर होता जाता है। शब्दों की आवृत्ति बढ़ने से पढ़ने की गति मे तीव्रता आती है। इससे ज्ञान सुदृढ़ होता है। मिलान (matching) क्रियाएँ भी करा सकते हैं। एक तरफ कुछ जाने पहचाने चित्र दे दीजिए और इन चित्रों में दिखाई गई वस्तुओं के नाम बच्चे नए शब्दों में से खोजें तो शब्दों को पहचानने का उनका अभ्यास बढ़ेगा और वे इनके अर्थ और प्रयोग अच्छी तरह समझ सकेंगे।

बस

नल फल

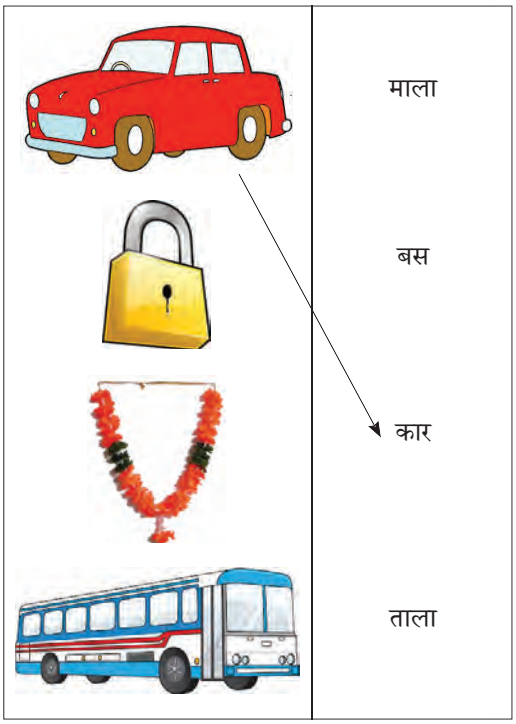

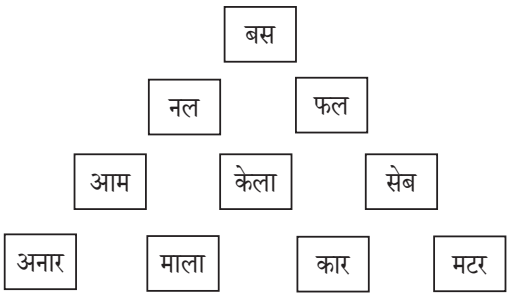

आम केला सेब

अनार माला कार मटर

चित्र बनाना बच्चों का पसंदीदा काम है। चित्रों की भी अपनी भाषा होती है जिनका उपयोग बच्चों की कल्पना शक्ति को निखारने, मौलिक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने आदि में किया जा सकता है। पढ़ने के साथ-साथ बच्चों को लिखने का अभ्यास भी कराना चाहिए। सुसंगत लिखना भाषा के आवश्यक कौशलों में से एक है मगर यहाँ सुसंगतता का आशय केवल लिपि या व्याकरण की शुद्धता से ही नहीं है वरन् बच्चे अपनी बात को कितनी अच्छी तरह से लिखकर बता पा रहे हैं यह देखना भी महत्वपूर्ण है। शुरुआत में बच्चों को मोमी रंग (क्रेयान) देकर सफेद बड़े कागज़ पर रगड़ने (Scribbling) के लिए दे सकते हैं। उन्हें कुछ बड़े चित्र दे सकते हैं और उन्हें चित्र में रंग भरने को कह सकते हैं। इससे बच्चों की छोटी मांसपेशियों (finger muscles) का विकास होगा। अँगुलियाँ पेंसिल पकड़ने के लिए धीरे-धीरे तैयार हो जाएँगी। फिर बच्चों को कुछ सरल आकृतियाँ दे सकते हैं जिनका अनुकरण बच्चे स्लेट या कागज़ पर कर सकते हैं। (कृपया नीचे दिया गया चित्र देखें)

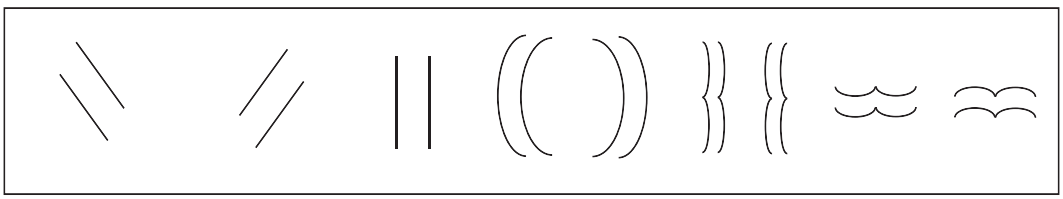

इससे बच्चे आकृतियों को पहचानने लगेंगे और साथ ही उन्हें अपनी अँगुलियों पर नियंत्रण भी प्राप्त होगा। रेखाओं का चयन ऐसा होना चाहिए कि जिनके योग से देवनागरी के वर्ण बन सकते हों। इससे बच्चे लिखना सीखने के लिए भली प्रकार तैयार हो सकेंगे। शुरुआत में कुछ वर्ण लिखने के लिए दिए जा सकते हैं फिर कुछ शब्द और फिर वाक्य। पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया के साथ अध्यापक बोलते समय सरल बोल-चाल की भाषा का प्रयोग करे तो अच्छा रहता है। इससे बच्चों को बातचीत करने का अभ्यास भी सहज रूप से हो जाता है।

पढ़कर अर्थ निर्माण करना भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य है। पढ़ने की प्रक्रिया को भाषा की अन्य प्रक्रियाओं से अलग करके नहीं सिखाया जा सकता। पढ़ने के द्वारा बच्चों की सुनने, बोलने,लिखने समझने और सोचने की योग्यताएँ भी विकसित होती हैं। कहानी या कविताओं का चयन इस प्रकार होना चाहिए कि जिनसे बच्चों में सहायता, सहयोग, बाँट कर उपयोग करना, दया, सफ़ाई, शिष्टाचार, आज्ञा पालन, पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति सजगता आदि गुणों का विकास करने में भी सहायता मिले। प्रत्येक बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

बच्चे के मस्तिष्क में शब्द एक चित्र के रूप में स्थापित होते हैं। किसी चित्र के सहारे वर्णों का परिचय कराया जाता है। चित्र को देखकर बच्चा यदि चित्र का नाम बता दे तो उसे पढ़ना मानना उचित नहीं होगा। यह पढ़ने की शुरुआत तो हो सकती है मगर पढ़ना नहीं है। बच्चों में पढ़ने की योग्यता तभी विकसित माननी चाहिए जब वे शब्दों को केवल लिखित रूप में देखकर ही पढ़ सकें, पढ़ने के लिए चित्र के सहारे की आवश्यकता न पड़े। सभी बच्चों पर बराबर ध्यान शुरुआत से ही देना चाहिए तो कोई कमज़ोर रहेगा ही नहीं।

पढ़ने के साथ-साथ सुनना, बोलना और सोचना भी चलता रहना चाहिए। अगर बच्चे सरल आकृतियाँ बनाने लगते हैं तो उन्हें वर्ण लिखने में कठिनाई नहीं होगी। वर्णों की शुद्ध और सुडौल बनावट पर बल देना चाहिए। छोटे बच्चों को कविताएँ बहुत अच्छी लगती हैं। अभिनयात्मक ढंग से कविता और कहानियों का प्रयोग करना चाहिए और करवाना चाहिए। शिक्षक स्वरचित व चयनित शिशु गीत और कविताओं को यदि बच्चों को गवाते हैं तो बच्चे तनावमुक्त रहते हैं और उनके सिखाने की तत्परता बनी ही रहती है। बच्चों को कहानी अवश्य सुनानी चाहिए, क्योंकि हर कहानी में कुछ विचार उभर कर आते हैं। इससे बच्चों में सुनने और बोलने की योग्यता का विकास तो होता ही है साथ ही तर्क शक्ति भी बढ़ती है।

इस तरह का प्रयोग करके यदि शिक्षक करके देखें तो शायद हिंदी पढ़ने-लिखने की शुरुआत के साथ-साथ सीखना आसान हो जाएगा और सुदृढ़ता बढ़ेगी। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *रिमझिम 1 पहली कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.